ISSN 2231-6191

# जन विकल्प

## 14-15

### समकालीन लंबी कविताओं से एक यात्रा

युद्ध और शांति
सृष्टि चक्र
प्रेवा घाघ के कबूतर
जंगल कथा
आद्य नायिका
भूखंड तप रहा है
वसंत
खंडहर
अभी तो
शोक सभा
अमर कोली
सुराजे हिन्द
डूबकर डूबा नहीं हरसूद
बाघ
उठो मेरे देश
बाघ और सुगुना मुंडा की बेटी
उजाले में अजानबाहु
गाँव का सपेरा
आइना-द्रोह
हत्या शृंखला की...
मंदिर लेन
कर्फ्यू खुला है
ट्रेन
उत्तर पटकथा बनाम सुराजे हिन्द
मोर नाच
जनता का आदमी
लकड़हारे की अधूरी कविता
जिधर कुछ नहीं
1857 के डेढ़ सौ वर्ष में
अहल्या
रक्तचाप
बंधक देश
कालयात्री
फिलहाल साँप कविता
मुश्किल आसानियों का सफरनामा

विकल्प, तृशूर

ISSN : 2231-6191

# जन विकल्प

अंक : 14-15 संयुक्तांक जनवरी-जून 2022, जुलाई-दिसंबर 2022

**पीयर रिव्यूड पत्रिका**

# समकालीन लंबी कविताओं से एक यात्रा

*संरक्षक*

**के.जी. प्रभाकरन**

*प्रबन्ध संपादक*

**वी.जी. गोपालकृष्णन**

*संपादक*

**पी. रवि**

*सह संपादक*

**के. एम. जयकृष्णन**

**पी. गीता**

*सलाहकार समिति*

**रवि भूषण** (रांची)

**विनोद शाही** (जालंधर)

**वि. कृष्णा** (हैदराबाद)

**देवेन्द्र चौबे** (नई दिल्ली)

**विनोद तिवारी** (नई दिल्ली)

**संपादन सहयोग** **पीयर रिव्यू टीम**

| | |
|---|---|
| सिन्धु ए. | डॉ. के.के. वेलायुधन, प्रोफेसर (Rtd), करुकुट्टी, एरणाकुलम, केरल। |
| के. राजेश्वरी | डॉ. बजरंग बिहारी तिवारी, प्रोफेसर, देशबंधु कॉलेज, दिल्ली वि.वि. दिल्ली। |
| वी.के. सुब्रह्मण्यन | डॉ. प्रज्ञा, प्रोफेसर, किरोड़ी मल कॉलेज, दिल्ली वि.वि., दिल्ली। |
| श्रीलेखा के.एन. | डॉ. उमा शंकर चौधरी, स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज, दिल्ली वि.वि., दिल्ली। |
| निम्मी ए.ए. | डॉ. प्रोमिला, एसिस्टेंट प्रोफेसर, IFLU, हैदराबाद, तेलंगाना। |
| षिगेश जी.एस. | डॉ. महेश एस., एसिस्टेंट प्रोफेसर, कालिकट वि.वि., मलप्पुरम, केरल। |

**आवरण**

विकल्प तृशूर

**टाईप सेटिंग**

सेलिन पी.टी.

**कार्यालय संपर्क**

V.G. Gopalakrishnan, Veluthath
Pamboor, Kuttur P.O., Thrissur-680 013, Kerala
09446358534
E-mail : vikalpthrisur@gmail.com

**संपादकीय संपर्क**

P. Ravi, 'Parayil'
URA-119, Unichira, Changampuzha Nagar P.O.,
Ernakulam, Kerala-682 033
09446269365
456raviparayil@gmail.com

सहयोग राशि : यह अंक : Rs.180

संपादन एवं संचालन पूर्णतया अवैतनिक और अव्यावसायिक।
पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं।
संपादक एवं संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है।
समस्त विवाद तृशूर न्यायालय के अन्तर्गत विचारणीय।

# अनुक्रम


| | | | |
|---|---|---|---|
| | संपादकीय | | ५ |
| १. | समकालीन कविताः अवधारणा और प्रस्थान | अच्युतानंद मिश्र | ७ |
| २. | केदारनाथ सिंह का माउंट एवरेस्ट | निशांत | १५ |
| ३. | मुक्तिबोध के बेहद मैदान में रघुवीर सहाय का खेल | व्योमेश शुक्ल | २८ |
| ४. | विक्षोभ और मोहभंग की तार्किक अभिव्यक्ति | राहुल शर्मा | ३१ |
| ५. | मशीन, मानव और चन्द्रकान्त देवताले का त्रिभुवन | डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी | ३६ |
| ६. | लोक और जन का चतुर चितेरा | डॉ. रश्मि कृष्णन | ४३ |
| ७. | लोकशक्ति में अटल विश्वास | प्रो.रामप्रकाश | ४९ |
| ८. | सजग करते रहने का दायित्व | चिन्चु रामचन्द्रन | ५५ |
| ९. | विकास के आतंक के खिलाफ कविता का ... | डॉ. के.जी. प्रभाकरन | ६२ |
| १०. | देश और कविता | प्रेमशंकर सिंह | ६८ |
| ११. | इंसानी सरोकार की कविता | डॉ. राधामणी सी | ७५ |
| १२. | श्रमिकों का संघर्ष जारी है | श्रुतिमोल के.एस. | ८१ |
| १३. | आईने से आती आवाज़ : 'तुम्हें देश दिखता है,...' | अवनीश यादव | ८४ |
| १४. | आसान जीवन के लगातार मुश्किल होते जाते... | राहुल शर्मा | ९० |
| १५. | आदमी और घोड़ो के बारे में कविता | रघुवंश मणि | ९६ |
| १६. | एक गंवई किसान के शहरी मज़दूर में बदलने ... | प्रणीता पी. | १०२ |
| १७. | अनंत कालयात्री कवि और कविता | डॉ. शोभना जोशी | ११० |
| १८. | स्वायत्तता के लिए संघर्ष करती कविता | डॉ. अनुज लगुन | ११७ |
| १९. | कर्फ़्यू की दहशत और आम आदमी की ज़िंदगी | डॉ. आर. शशिधरन . | १२४ |
| २०. | परिप्रेक्ष्य को सही करने की बलवती स्पृहा | पी. रवि | १२८ |
| २१. | प्रतिरोध का स्वप्न जाल | रामप्रसाद | १३९ |
| २२. | संवेदनशील यथार्थ की कविता | डॉ. प्रिया ए. | १४४ |
| २३. | दैहिक चिन्तन का अन्तरविषयात्मक अभियान | जयकृष्णन के.एम. | १५१ |
| २४. | कविता में सभ्यता समीक्षा | गोपाल प्रधान | १५४ |
| २५. | आजानुबाहु के पीछे | डॉ. के.के. वेलायुधन | १५९ |
| २६. | शिकारियों से भरे समय में मुक्ति का प्रश्न | डॉ. पुनीतकुमार राय | १६७ |
| २७. | संघर्षपूर्ण समय की कविता | श्रीलेखा के.एन. | १७१ |
| २८. | सभ्यता की सद्गति में समय का संस्कृति विमर्श | डॉ. पद्मप्रिया | १७५ |
| २९. | बेहतर एवं उदार गुलामी के खिलाफ संघर्ष | सिन्धु ए. | १८१ |
| ३०. | पुराण के बहाने स्त्री अस्मिता की तलाश | डॉ. के. अजिता | १८६ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३१. | मुक्त स्त्री का अनुभव संसार | रेखा सेठी | १९१ |
| ३२. | भगतसिंह के लिए एक गद्यात्मक सम्बोध-गीति... | डॉ. प्रोमिला | १९८ |
| ३३. | बाज़ार की भूख के बीच नागकेसर के फूल... | शिगेष जी. एस. | २०४ |
| ३४. | मुकम्मल जीवन का संत्रास एवं बेचैनी के... | डॉ. प्रमोद कोवप्रत | २१२ |
| ३५. | रैडिकल बहस की कविता | डॉ.प्रभाकरन हेबबार इल्लत | २१६ |
| ३६. | इतिहास की आलोचना | विजयकुमार ए.आर. | २२५ |
| ३७. | बनारस का ओरहन दिल्ली को | विन्ध्याचल यादव | २३१ |
| ३८. | जीवन में वसंत | डॉ. नीलाभ कुमार | २४२ |
| ३९. | आदिवासियत व मुक्ति के संघर्ष की गाथा | डॉ. प्रणव कुमार ठाकुर | २४५ |
| ४०. | अशांति के समय से साक्षात्कार करने वाली... | डॉ. धन्या के.पी | २५१ |
| ४१. | जटिल मनोभावों, मानसिक अंतर्द्वन्द्वों का... | यासमीन अशरफ | २५८ |
| ४२. | युद्ध के संकट का रचनात्मक प्रतिरोध | डॉ. सुनील कुमार शॉ | २६२ |
| ४३. | सत्ता प्रायोजित हिंसात्मक संस्कृति का दौर | वी.जी. गोपालकृष्णन | २६६ |
| ४४. | देश के दुर्दिनों की भविष्यवाणी | दिनेश कुमार माली | २७१ |
| ४५. | उसके उदास कमरे में एक खिले हुए लाल... | अरुण होता | २८१ |

# दो शब्द

**उ**भरता सामाजिक-बोध आधुनिक काल की एक बड़ी विशेषता है। बढती यह सामाजिकता पूर्ववर्ती काल से इसे पृथक करता है। बल पकडते स्वतंत्रता आन्दोलन और नवोत्थान के साथ आर्थिक, सांस्कृतिक स्वाधीन बोध आदि इस सामाजिकता को बल प्रदान करती हैं। इसका प्राभव साहित्य पर भी पडने लगा। इस परिवर्तन को अभिव्यक्त करने के लिए काव्य-रूपों में भी बदलाव अनिवार्य हो गया। कविता का जन्म स्वाधीन चिंता एवं कल्पना के गर्भगृह में हुआ था। लेकिन काव्यशास्त्र कविता की मूल चेतना पर पाबंदियाँ लगाता रहा। सर्गबद्धता, नायकत्व, छंद-अलंकार, रस आदि परम्परागत रूढ़ सांचों में प्रमुख रहें। मुक्ति-चेतना और रूढ़ परम्परा का एकसाथ प्रस्थान मुमकिन नहीं है। इस संदर्भ में प्रबन्ध काव्य(मुख्यतया खंडकाव्य) से लंबी कविता अपनी अलग पहचान दिखाने लगी। खुद आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की -कवि कर्त्तव्य, -संपत्तिशास्त्र- आदि रचनाएं परिवर्तन की मांग करने की प्रेरणा देती रही। इस प्रकार सामयिक होने के लिए संरचना एवं काव्य भाषा परिवर्तन आवश्यक हो गया। छायावादी कवियों हिन्दी में इसकी शरुआत की। इस मुद्दे पर विचार करते करते हुए प्रभात त्रिपाठी ने लिखा है कि पंत की परिवर्तन, प्रसाद की प्रलय की छाया, निराला की राम की शक्तिपूजा- जैसी कविताएं प्रबन्ध और प्रगीत के भेद को, सृजन का मुख्य आधार मानकर की गई रचनाएं नहीं हैं। उनमें आधुनिक युग के विशिष्ट भारतीय समय का दबाव, रचनाशीलता के बनियादी घटक की तरह क्रियाशील है। इन रचनाओं में एक ऐसी काव्य भाषा की खोज है, जिसमें कविता के युगों के संस्कारों के साथ खडीबोली के विशिष्ट आधुनिक संस्कार और आधुनिक गद्य के नए विचार को जगह मिल सकें।(वर्तमान साहित्य शताब्दी कविता विशेषांक, मई-जून २०००)

लंबी कविता का आरंभ छायावादी कवियों ने किया, लेकिन उनकी लंबी कविताओं में भी छायावादी राग कम है, जितनाउन्हीं की ही अन्य छायावादी कविताओं में प्रकट होता है। लंबी कविताओं में जो राग है वह स्त्री-पुरुष या प्राकृतिक उपादानों की अपेक्षासामाजिक समस्याओं को लेकर कवि की सजगता प्रकट करता दिखाई देता है। कहीं स्वतंत्रता आन्दोलन की अनगूंज है तो कहीं आधुनिक औद्योगिक सभ्यता की आहट की ध्वनि-प्रतिध्वनि है। जैसे रामचन्द्र शुक्ल ‘कविता क्या है’ में लिखते हैं कि ‘ज्यों-ज्यों हमारी वृत्तियों पर सभ्यता के नये-नये आवरण चढ़ते जाएंगे, त्यों-त्यों एक ओर तो कविता की आवश्यकता बढ़ती जाएगी, दूसरी ओर कवि-कर्म कठिन होता जाएगा।’ बदलते इस आधुनिक परिवेश ने काव्य को प्रबन्धात्मकता और उसकी इतिवृत्तात्मकता से मुक्त होने को मजबूर किया। परिवेश के अनुसार जटिल होते जीवन तथा उसकी पेचीदगियों को यथार्थ के साथ अभिव्यक्त करने का प्रयास कविता की सबसे बडी चुनौती बन गयी। इस चुनौती को मुक्तिबोध अपने दौर में अधिक महसूस करते थे। बाहरी और भीतरी कठिन पाटों के बीच पिसते जीवन को अभिव्यक्ति देने के प्रयास में उनकी कविताएं लंबी होने लगी।आगे यही संकट रघुवीर सहाय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, राजकमल चौधरी, श्रीकांत वर्मा, भगवत रावतआदि से लेकर एकांत श्रीवास्तव और अनुज लुगुन तक के कवियों में देख सकते हैं। अधिकांश कवियों की काव्य-भाषा

एवं बिंब विधान भी इसके अनुसार जटिल होते रहे।

जन विकल्प का यह अंक लंबी कविता के औपन्यासिक आयामों को शब्दबद्ध करने में कहाँ तक सफल निकला है, इसका अवलोकन पाठक ही करेंगे। इस अंक में सन १९८० के बाद प्रकाशित कविताओं पर फोकस करने का प्रयास इसलिए किया गया कि उसके पूर्व की लंबी कविताओं पर नरेन्द्र मोहन तथा अन्य लोगों ने बहुत काम किए हैं।एक कवि की एक लंबी कविता के क्रम में कविताओं को समेटने का प्रयास हमारी ओर से हुआ, फिर भी उसे पूर्ण करने में असमर्थ हुए हैं। कुछ लेख समय पर नहीं मिले, यही मुख्य कारण है। फिर भी पाठक इसका स्वागत करेंगे, इस विश्वास के साथ....।

पी. रवि
संपादक


जन विकल्प

**आगामी अंक**

**उपन्यास : 2000 के बाद**

**स्त्री कहानी**